replied, "we are Indians and we do not believe in a number of husbands. We stay with only one husband, if he is alive. And, even if he is dead, we stay like that only". They were surprised. This is what we are known for. We are known for our culture and for our goodness. But, when it is like this, when this type of injustice is done to women in our country, we feel very sorry. That is why, I decided to bring this Bill in this House and place it for consideration of the hon. Members of this august House and call upon them to share their views and wisdom on this most crucial issue pertaining to the social and economic upliftment of women, specially dalit women and women in general. I hope all my colleagues will support my views.

The question was proposed.

MESSAGE FROM THE LOK SABHA

SECRETARY-GENERAL : Sir, I have to report to the House the following message received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha :

"I am directed to inform you that Lok Sabha, at its sitting held on Friday, the 5th December, 2003, adopted the following motion :-

That this House do recommend to Rajya Sabha that Rajya Sabha do agree to nominate one member from Rajya Sabha to associate with the Committee on Public Accounts of the House for the unexpired portion of the term of the Committee *vice* Shri C.P. Thirunavukkarasu retired from Rajya Sabha and do communicate to this House the name of the member so nominated by Rajya Sabha.

2. I am to request that the concurrence of Rajya Sabha in the said motion, and also the name of the member of Rajya Sabha so nominated, many be communicated to this House.

THE WOMEN AND GIRLS (PREVENTION OF STRIPPING, TEASING, MOLESTATION, BRANDING AS WITCHES AND OFFERING AS DEVADASIS) BILL, 2003-Contd.

श्रीमती सविता शारदा (गुजरात) : महोदय, आज सम्माननीया सदस्या श्रीमती बिम्बा रायकर महिलाओं या लड़कियों को सार्वजनिक रूप से निर्वस्त्र करने और उन्हें नग्नावस्था में घुमाने, उनसे छेड़खानी करने, उन्हें उत्पीड़ित करने, उनकी लज्जाभंग करने और उन्हें डायन के रूप में घोषित

करके उनकी हत्या करने तथा उन्हें देवदासी के रूप में अर्पित करने का निवारण और प्रतिषेध करने तथा ऐसे अपराधों के लिए भयप्रतिकारी दंड का प्रावधान करने और इन अपराधों को संज्ञेय तथा गैर-जमानती बनाने तथा तत्संबंधी विषयों का उपबंध करने वाला जो विधेयक लेकर आई हैं, उसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं और मैं इस बिल का समर्थन करती हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारी भारतीय संस्कृति बहुत प्राचीन है, जैसे बिम्बा रायकर जी ने भी कहा है, बहुत पुरानी है। भारतीय संस्कृति वही है जो नारी की पूजा करता रही है। इसलिए कहा भी गया है:

''या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमो नम: ।।

अर्थात् हम उस शक्ति की पूजा करते हैं। उस नारी की पूजा करते हैं उसे नमस्कार है। लेकिन आज हमें यह देखना पड़ेगा कि उस नारी की, जिसकी हम पूजा करते हैं, भगवान या देवी समझ कर। आज उस नारी का क्या महत्व है? उसका क्या स्थान है। बिम्बा रायकर जी ने जो मुद्दे यहां पर दिए हैं, मैं उन सब के बारे में अलग-अलग तथ्य प्रस्तुत करना चाहती हूं।

सर्वप्रथम उन्होंने निर्वस्त्रीकरण के बारे में कहा है। सर, आजकल जब हम टीवी देखते हैं या फिल्में देखते हैं तो मुझे लगता है कि पता नहीं हम क्या देख रहे हैं। ऐसे लगता है कि कुछ समझ ही नहीं आ रहा है पहले तो ऐसा था कि देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी और नारी की भी वैसी ही पूजा होती थी लेकिन आज तो स्त्री को जिस रूप में रखा जा रहा है उससे तो लगता है कि पता नहीं समाज किस तरफ जा रहा है। सर्वप्रथम जब टीवी सीरियल हम देखते हैं, जैसे आजकल एकता कपूर के जो टीवी सीरियल आ रहे हैं, उनमें भी, जहां देखिए कहीं न कहीं स्त्री का स्थान जो प्रस्तुत कर रही हैं, उससे तो लगता है कि ऐसे सभी टीवी सीरियल्ज बंद कर देना चाहिए। नारी के अंदर, उसकी जो मानसिकता बताई जा रही है, या दिखाई जा रही है कि वह देवी रूप में नहीं, बल्कि जिस रूप में वह दिखाई जा रही है उसे चरितार्थ करना भी मेरे लिए बहुत मुश्किल हो रहा है। इसके अलावा म्यूज़िक चैनल्ज़ पर जितने भी पॉप म्यूज़िक या ऐसे ही अन्य मिक्स म्यूज़िक जो आ रहे हैं, उनमें भी निर्वस्त्रीकरण सब से ज्यादा बढ़ गया है अभी सबसे ज्यादा, जहां भी हम लड़कों और लड़कियों में बात-चीत करते हैं तो सर्वप्रथम तो सलमान खान की बात आती है। हमेशा उसको यही दिखाते हैं कि कोई भी गाना गा रहा है या कुछ कर रहा है तो वह कपड़े उतारने लग जाता है। यह समाज कहां जा रहा है? आप देखिए, कई बार तो बेड रूम्ज़ के सीन्ज़ भी वहां दिखाए जा रहे हैं अभी-अभी बिम्बा जी ने जो कहा है, उनके कहने का अर्थ यह था कि औरत को निर्वस्त्र नहीं दिखाया जाना चाहिए। द्रौपदी जी का जब चीरहरण हुआ था तो उसने कृष्ण से कहा था कि कृष्ण तुम आ कर मेरी सहायता करो, लेकिन आज तो समाज में जब लड़की को निर्वस्त्र

किया जाता है तो वह किससे प्रार्थना करेगी? आज तो बंद कमरे में निर्वस्त्र करके उसकी जो दुर्दशा की जा रही है यह तो कहना भी मुश्किल है। एम टीवी में जो गाने आते हैं, उनमें भी दो-तीन गाने ऐसे थे, जैसे कि "कांटा लगा" वाला गाना था और भी कुछेक गाने ऐसे थे कि जिनके बारे में बहुत बातें होती थीं। यह क्या हो रहा है? समाज के अंदर औरत को भोग्य के रूप में दिखाया जा रहा है। पहले उसे देवी के रूप में कहा जाता था, लेकिन आज समाज में स्त्री को भोग्य के रूप में ही प्रस्तुत किया जा रहा है और अधिक से अधिक निर्वस्त्र करके दिखाया जा रहा है। अभी आप फैशन डिज़ाइनिंग के नाम पर देखिए। आज फैशन डिजाइनिंग में क्या है? आज ये लड़कियां जो कपड़े पहनकर निकलती है, क्या यह हमारी संस्कृति के अनुरूप है? कदापि नहीं है। अब तो हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूल जाएं और विदेशों का अंधानुकरण करते चले जाएं।

फिर तो ऐसी बात हो जाएगी कि, "कौआ चला हंस की चाल और अपनी चाल भी भूल गया।" निर्वस्त्रीकरण की बात कही गयी। महोदय, इस बारे में मैं एक एक्जाम्पल देना चाहती हूं। किसी लड़की को एक फिल्म में साइन किया गया। उस लड़की का टी॰वी॰ पर इंटरव्यू आ रहा था। उससे यह कहा गया कि तुमने इसे साइन किया है और उसी तरह का तुम्हें काम करना चाहिए। उस लड़की ने कहा कि मेरे साथ जो अनुबंध किया गया था, उसमें ये सीन नहीं थे। इस पर उस प्रोडयूसर ने कहा कि मेरी फिल्म की थीम ही यही है। उस फिल्म का हीरो कहता है कि मैं जो काम कर सकता हूं. क्या तुम भी कर सकती हो? तो हीरोइन कहती है कि जो तुम कर सकते हो वही सारे काम मैं भी कर सकती हूं। मैं पुरुषों से पीछे नहीं हूं। वह हीरो आगे कहता है कि मैं अपनी कमीज उतारता हूं, तो तुम भी अपनी कमीज उतारो। फिर उस फिल्म का प्रोड्यूसर कहता है कि यह तो मेरी फिल्म की मांग है। अब इस तरह मांगें ये प्रोड्यूसर्स क्यों रखते हैं? ये हीरोइन को क्यों निर्वस्त्र दिखाना चाहते हैं?

महोदय, आज हम जो भी टी॰वी॰ चैनल खोलते हैं, पुस्तकें देखते हैं तो पाते हैं कि इनमें अधिकतर महिलाओं को नंगे रूप में दिखाया जाता है जैसे कि इन चैनल्स और मैगजींस वालों का यह सबसे बड़ा शौक बन गया है। मैं मीडिया से भी कहना चाहूंगी कि वे भी देखते हैं कि हमारी जो बुक या मैग्जीन छप रही है, उसमें किस प्रकार मॉडल्स को नंगे रूप में प्रस्तुत करें। इसलिए आज समाज का यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह नारी को निर्वस्त्रीकरण के रूप में दिखाए जाने की प्रवृत्ति को रोके, इसे बैन करे।

महोदय, इसके अलावा बिम्बा रायकर जी ने दूसरा मुद्दा छेड़खानी का उठाया है। आज छेड़खानी कहां नहीं हो रही है। कॉलेजों में, बसों में ट्रेन में-जहां भी जाइए, महिलाएं हों, लड़कियां हों या बच्चियां हों, उन्हें छेड़ने से लड़के और आदमी बाज नहीं आते। महोदय, कहने को तो हम महिला सशक्तीकरण की बात कहते नहीं थकते, लेकिन उसके व्यवहार में कैसे संभव बना पाएंगे जब कि वे घर से निकलने में भी डरती हैं? दिल्ली की लड़कियां कहती हैं कि हम बाहर सड़कों पर जाने से डरती हैं क्योंकि हमारे साथ छेड़खानी होती है। अब इस छेड़खानी के अलग-अलग

कारण हैं। उनके साथ ईव टीजिंग होती है, कॉलेज में उनको छेड़ा जाता है। अभी एक दिन मैं कॉलेज में कुछ लड़कियों के साथ बैठी थी। उन्होंने जिस तरह की टीजिंग के उदाहरण दिए, उससे मुझे नहीं लगता कि कोई अच्छे घर की लड़की ट्रेन में सफर कर पाएगी या बस में या सड़कों पर चल पाएगी। एक लड़की ने बताया कि ट्रेन में जो आदमी सूप बेच रहा है, उसके दिल में भी यह हसरत रहती है कि मैं उस लड़की को हाथ लगाऊं। महोदय, समाज में नारी की इस तरह की दुर्दशा हो रही है: इसके लिए बिम्बा जी जो विधेयक लाई हैं, मैं समझती हूं कि उन्हें पूरे हाउस से समर्थन मिलना चाहिए और इस बिल को जरूर पास किया जाना चाहिए।

महोदय, इसके अलावा आज महिलाओं का उत्पीड़न किया जाता है। आप टी॰वी॰ खोलिए और सारी-की-सारी समस्याएं आपके सामने आ जाती हैं। मैं कल एक सीरियल देख रही थी जिसमें दिखाया जाता है कि एक लड़की सर्विस करती है और प्रमोशन के लिए उससे कहा जाता है कि अगर तुम मेरे साथ अच्छी तरह रहोगी और मेरे साथ होटल्स में जाओगी तो मैं तुम्हारा प्रमोशन कर दूंगा। वह लड़की जोकि सीधे-सादे, मोरल वैल्यूज वाले परिवार की लड़की है, अपनी मां के पास जाकर रोती है। उसकी मां उसे दिलासा देती है, लेकिन और दूसरा कोई उसे साथ देने वाला नहीं मिलता।

महोदय, महिला को डायन के रूप में भी दिखाया जाता है। आए दिन न्यूज पेपर में भी खबर छपती है कि एक महिला को डायन समझकर बहुतं बुरी तरह से मारा गया जिस कारण उस की मौत हो गयी। लेकिन समाज का कोई भी व्यक्ति उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया। अब इसके पीछे आप क्या कारण देखते हैं? क्या हमने कभी उस कारण को जानने की कोशिश की है? महोदय, इसका कारण है कि एक तो समाज में अज्ञानता और दूसरे हम धार्मिक रूप से भीरु हैं। हम यह सोचते हैं कि नहीं, यह जो हो रहा है वह धर्म के अनुसार हो रहा है। मैं यह बात नहीं समझ पा रही कि औरतों को ही डायन समझ कर क्यों मार दिया जाता है? इसका प्रभाव पुरुषों पर क्यों नहीं पड़ता, जबकि पुरुष भी तो बहुत सारे ऐसे काम करते हैं, लेकिन पुरुषों को कभी नहीं मारा जाता। औरतों को ही सब मिलकर मारते हैं और मैं तो यहां तक देखती हूं कि औरतें भी उसमें शामिल होती हैं कि फलां डायन है उसको मार दिया जाए। यह जो हमारी मानसिकता है और अज्ञानता या जिन कुरीतियों के कारण हमारे समाज में बहुत सारी बुराइयां हैं उन बुराइयों को मुझे लगता है कि दूर करना चाहिए। लेकिन, ये दूर कैसे होंगी?

महोदय, आज हम लड़कियों को पढ़ाने के लिए स्कूल में ही नहीं भेज पा रहे हैं। आज सुबह ही मंत्री जी यह कह रहे थे कि उन्होंने एक बिल बनाया है, जिसके अनुसार 6 साल से 14 साल तक के बच्चों को पढ़ाना ही है, लेकिन आप देखिए कि लड़कियों को भेजा ही कहां जाता है। पचास साल पहले जो परिस्थिति थी, आज भी वही परिस्थिति है कि घर के लड़के पढ़ते है और लडकियां नहीं पढती हैं। मैं यह कहना चाहूंगी कि अगर इस अज्ञानता को दूर करना है तो इसके लिए लिटरेसी का जो रेट है उसको हमको बढ़ाना पड़ेगा और धार्मिक रूप से जो आज हमारे बड़े

बड़े धार्मिक गुरू बन बैठे हैं उनको एक गाइडलाइन समाज को देनी पड़ेगी कि किस प्रकार के समाज के मोरल वेल्यूज होने चाहिएं।

महोदय, इसके अलावा बिम्बा जी ने जो बात देवदासी के बारे में कही, वह भी बड़ी महत्वपूर्ण है। आज भी देवदासी के रूप में कई प्रदेशों में छोटी-छोटी लड़कियों की पहले भगवान से शादी कर दी जाती है और उसके बाद उसे मुखिया के पास जाना पड़ता है। मैं आपको बताना चाहूंगी कि अभी थोड़े दिन पहले की बात है कि एक लड़की मेरे पास आकर कहती है कि ऐसी बात है। मैंने कहा-तुम बोलो तो सही, क्या बात है? वह लड़की दूर-दराज के गांव से आई थी, कहती है-मैडम, मुझे गांव का जो जमींदार है, जमींदार का मतलब जो बड़े लोग होते हैं, उसका नाम वह नहीं बता रही थी, कहती है कि उसने मुखिया को कहा कि मुझे वह लड़की चाहिए। सर, सोचिए, यह किस तरह की मानसिकता है कि मुझे वह लड़की चाहिए? उसने कहा कि वह देवदासी है। तो कहता है कि कोई बात नहीं, देवदासी है तो उस पर मेरा भी पूरा हक बनता है। पुजारी बोला कि वह लड़की तो बहुत भोली भाली है, उसने कभी पर-पुरुष का स्पर्श भी नहीं किया। तो वह कहता है कि और मजा आएगा। जस्ट इमेजिन, सर, यह पुरुषों की मानसिकता है। एक पुरुष छोटी, 14 साल की लड़की के बारे में सोचता है कि वह मेरी बेटी नहीं बल्कि देवदासी बनकर मेरे घर की शोभा बढ़ाए। क्या यह वही समाज है, जिसमें हम राधा और कृष्ण की पूजा करते हैं, पार्वती की पूजा करते है? आज यहां भी देखा जाए, ऐसी मानसिकता है। अगर कोई पेंटिंग बनानी है तो उस कलाकार की मानसिकता देखिए, उसकी हार्दिक इच्छा होती है कि वह एक ऐसा पोर्टेट बनाए, जिसमें औरत अर्धनग्न अवस्था में लेटी हुई हो या बैठी हुई हो। इस प्रकार से औरत को नंगा करना, देवदासी बनाना, छेड़खानी करना, निर्वस्त्र घुमाना अगर यही समाज के मोरल वेल्यूज हैं तो मैं ऐसा समझती हूं कि यह हमारा भारतीय समाज नहीं है।

महोदय, मैंने एक कविता पढ़ी थी। उस कविता में कुछ सूखे पत्ते हैं, एक मोटर कार आती है तो उसकी हवा में उड़ते हुए उसके साथ भाग जाते हैं। सूखे पत्ते हैं, लेकिन उनको भी लगता है कि हमारे अंदर जान आ गई है। क्या हमारे मोरल वेल्यूज ऐसे हैं कि जो विदेशों की हवा आ रही है या जो पश्चिम की हवा आ रही है उनके साथ हम भागते हुए चले जाएं? यह हमारी सभ्यता नहीं है?

अंत में, महोदय, मैं यही कहना चाहूंगी कि आज बहुत सारे महिला संगठन हमारे यहां इसके लिए काम कर रहे हैं। वीमेन कमीशन है, वह भी अपना काम कर रहा है और बहुत सारे एनजीओस हैं, वे भी इनके लिए काम कर रहे हैं, लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कोई कमी तो जरूर है। अब उस कमी को कैसे दूर करना है? इसके लिए पूरे समाज के लिए, पूरे देश के लिए समझकर एक कानून बनाना पड़ेगा। हम यह भी देखते हैं कि हमारा दहेज विरोधी कानून है, मगर जहां जाइए कानून होने के बावजूद दहेज की जो प्रथा है वह बंद नहीं हुई है। इसके

कारण बहुत सारी लड़कियों का शोषण भी हो रहा है, उनको जिंदा जलाया भी जा रहा है, उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया जा रहा है। मैं समझती हूं कि अगर संगठनों से हमको काम लेना है तो उनको कुछ शक्तियां हमें प्रदान करनी होंगी। अगर इन संगठनों को हम शक्तियां प्रदान करते हैं तो वे मजबूती से काम कर सकेंगे। अभी थोड़े दिन पहले एक न्यूज-पेपर में मैं पढ़ रही थी कि मुम्बई में जो बार चलते हैं उनमें 50 हजार लड़कियां अंडर 14 ईयर्स की काम कर रही हैं। आप यह सोचिए कि 50,000 लड़कियां, चांदनी बार या ऐसे कुछ उनके नाम होते हैं, उनमें 14 साल से छोटी 50,000 लड़कियां काम कर रही हैं। पुलिस वाले कहां हैं, नारी संगठन वाली संस्थाएं क्या देख रही हैं? मुझे लगता है कि इन सबके ऊपर एक कड़ा दंड होना चाहिए। इन सबके पीछे क्या कारण हैं? अभी श्रीमती बिम्बा रायकर जी ने जैसा बताया कि वे जब घर जाती हैं तो पैसा बहुत लेकर जाती हैं या कॉस्मेटिक का सामान बहुत ले जाती हैं और दूसरी लड़कियां भी उससे मोहित हो जाती हैं कि हमें भी कुछ मिलेगा। मुझे लगता है कि ऐसे लोगों के लिए कुछ ट्रेनिंग प्रोग्राम रखे जाने चाहिए, उन्हें कुछ इस तरह की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए जिसमें उन्हें बनाया जाए कि ये सब गलत बातें हैं। इसके साथ ही साथ हमारे समाज में जो कुरीतियां हैं, जो बुराइयां हैं, उन्हें दूर करने के लिए बड़े-बड़े लोगों को आगे आना चाहिए, धर्म-गुरुओं को आगे आना चाहिए, समाज के एन॰जी॰ओज़॰ को आगे आना चाहिए, संगठनों को आगे आना चाहिए और इन सब कुरीतियों का निवारण अवश्य होना चाहिए। इसके अलावा हमारे अंदर एक वैज्ञानिक सोच भी आनी चाहिए कि ये डायन वगैरह के किस्से गलत हैं। इसके लिए इंटीरियर में जो संगठन काम करते हैं उनके ऊपर काफी जिम्मेदारी आती है।

अंत में मैं इतना ही कहूंगी कि समाज के अंदर हमें एक जागरूकता लानी चाहिए और यह जागरूकता तभी आ सकेगी जब हम महिलाओं के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक होंगे और उन्हें दूसरा दर्जा न देकर समान दर्जा देंगे और महिलाओं को समान दर्जा देने के बाद ही मुझे लगता है कि इस प्रकार की घटनाएं दूर हो पाएंगी।

इसलिए मैं चाहती हूं कि यह बिल अवश्य पास हो, मैं इसका समर्थन करती हूं और श्रीमती बिम्बा रायकर जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं कि वे इस प्रकार का बिल लाईं।

DR. M.N. DAS (Orissa): Sir, I must first congratulate my esteemed sister, Bimba Raikarji, for having brought such a Bill before this House. With the best of intentions, she has brought this Bill because it affects the entire womenhood of India in different forms. Sir, .when we think of our time, let us not forget one thing that the time, which we are passing through, is not a good time. It should be termed as an age of decay and degeneration—social decay and cultural degeneration. But foret about this time. The

society has created the State. State means many institutions. Police is a part of the State, Law and order, security, court, judges, prison, everything, for what purpose? All the instruments of the State are required to preserve the society. Preserve the society in what sense? Preserve the society in an ethical sense, moral sense with certain values. But, when we make a study of our old history, history of our country, we find the Indian society and the Indian culture, present a paradoxical face. In theory, we pay utmost respect and regard to the womenhood. We call them mothers, sisters, daughters, etc. We also address them as Devis, as Shrimati Raikar has pointed out, like goddesses. Devi means Goddess. But that is in theory, in philosophy. But, in practice, if we study the entire life of Indian women through ages, perhaps, in no other country, had women been so much oppressed, as in India. There was a time when we practised what is called female infanticide. When a girl child is born, kill it, either by administering a little poison or opium just at the time of birth, or drown her in a pot of milk. That is what we used to do. What about widows? Well, a widow—whether her age is eight, nine or ten—is burnt alive at the funeral pyre of her dead husband, who may have been more than 60 or 70 years old. That is what we practice in our country.

Now, the items listed by Raikarji which need preventive action and stern action are few in number; many more things may be added because we are torturing our women in many ways in our society. Sir, let us not forget that some kind of anti-social elements have entered into our social existence. There may be many factors, reasons and causes behind why they have become anti-social. The number of educated people is growing day by day but there is no employment. Frustration has come in. Social restlessness has come in. Many people automatically, psychologically, intentionally turn wayward. One cannot think of measures now of how to prevent it. But, anyway, that is a different story.

Now, we are afraid to send our little daughters and grand-daughters to schools and other academic institutions. On entrance, they face something known as eve-teasing, which is a new word that has come in. On entrance, there will be some young men teasing young girls. Our daughters go to offices to serve after they complete their education, but they are not spared in their offices of molestation by some superiors or senior officers. You go to a police station to lodge an FIR; who knows the Police people will not misbehave with you, or try to molest you. As my

sister on the other side pointed out, you enter into a bus or a train, and you run all sorts of risks to yourself, to your modesty and to your dignity as an individual. There was a time when people were chivalrous. A woman entered a bus, and they would offer her their seat. But today, it is the other way round; a woman enters, and they try to manhandle her, touch her body, insult her in one way or the other.

In hundred and one ways, the society today is ill-treating woman, whether they are of tender age or old age. Who should come to their rescue? If half of humanity in any country is made up of womanhood and they are not protected, they are not respected, their dignity and modesty are not preserved, how can we feel proud of our culture, our society or our own lives? Here comes the question of Government responsibility also. There is one single thing that the society must be aware of. The society must know how to behave. Every individual must be taught how to behave. If I do not behave properly, should there be no law to punish me, to deter me and to prevent me from doing something wrong? But what we find in our country today is that our women are not safe in our so-called civilised society. We are proud of our culture. We are proud of our progress. We are proud of many other things. But we cannot be proud of ourselves as far as our etiquette and our behaviour is concerned. So, this Bill is well-intentioned and well-intended.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI): Dr. M.N. Das, now it is 5 p.m. Further consideration on this Bill will continue on Friday, the 19th December, 2003. You may continue your speech on that day.

DR. M.N. DAS: So kind of you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI): Now, the House stands adjourned till 11 a.m. on Monday, the 8th December, 2003.

The House then adjourned at five of the clock till eleven of the clock on Monday, the 8th December, 2003.